सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक) संस्थापक मुख्य संपादक - कॉमरेड प्रीतिश चन्दा

वर्ष-25 अंक-9 7 मई, 2010 R.No.- 43022/85 P.R.No.-DL(C)-12/1123/2009-2011 मूल्य : 2 रुपये

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का 62वाँ पार्टी स्थापना दिवस देशभर में मनाया गया

कलकत्ता

2010 में 24 अप्रैल एक बार फिर पार्टी कार्यकर्ताओं से अपनी प्रतिज्ञा को पुनः दोहराने का आह्वान करते हुए आया। 24 अप्रैल पूरी मर्यादा के साथ मेहनतकश लोगों तक यह संदेश देते हुए मनाया गया कि पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति के माध्यम से मानव द्वारा मानव के शोषण के खात्मे के अत्यावश्यक काम को अंजाम देने के लिए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के झंडे तले क्रांति के अगुआ दस्ते के रूप में खुद को संगठित करें। इस पथ पर आप कितना आगे बढ़े हैं? अपने आपको सही मायने में कम्युनिस्ट के रूप में ढालने के काम में आपने कितनी प्रगति की है? यही संदेश देश के एक कोने से दूसरे कोने में प्रतिध्वनित हो रहा है।

पश्चिम बंगाल

कलकत्ता के शहीद मीनार मैदान में एक विशाल जन सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने की। पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने मुख्य वक्ता के रूप में सभा को सम्बोधित किया। केन्द्रीय कमेटी सदस्य और पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड सोमेन बोस ने शुरूआती वक्तव्य रखा। पिछले वर्ष की तरह कॉमसोमोल के तरुण कॉमरेडों ने गार्ड ऑफ आनर दिया।

अध्यक्षीय भाषण पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने रखा।

इसके बाद एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने अपना सारगर्भित भाषण दिया जिसे अगले अंक में छापा जाएगा।

हरियाणा

24 अप्रैल को भिवानी में एक जन सभा का आयोजन किया गया। हरियाणा राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड अनूप सिंह ने सभा की अध्यक्षता की। पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती सभा के मुख्य वक्ता थे। केन्द्रीय कमेटी सदस्य और हरियाणा राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड सत्यवान और हरियाणा राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल ने भी सभा को सम्बोधित किया।

कर्नाटक

25 अप्रैल को बैंगलोर में स्थापना दिवस सभा का आयोजन किया गया। कर्नाटक राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड बी मंजूनाथ ने सभा की अध्यक्षता की। कर्नाटक में ही एक अन्य सभा 27 अप्रैल को धारवाड़ के कला भवन में आयोजित की गई। धारवाड़ की सभा में बेलगाँव, हावेरी, गदाग, नार्थ कन्नाड, कोप्पाल, बेल्लारी, रायचूर, देवनगिरि, बीजापुर जिलों से आए सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ताओं, समर्थकों और हमदर्दों ने हिस्सा लिया जिसकी अध्यक्षता कर्नाटक राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामजनप्पा अल्दाल्ली ने की। दोनों ही अवसरों पर पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड के राधाकृष्ण ने भी सम्बोधित किया। उपरोक्त दोनों सभाओं में मुख्य वक्ता कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती थे।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सरकारों की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ 27 अप्रैल को आम हड़ताल करके लोगों ने रोष जताया

गत 27 अप्रैल को जन जीवन की महत्त्वपूर्ण माँगों को लेकर एसयूसीआई(सी) ने अखिल भारतीय आम हड़ताल का आह्वान कया था जिसमें लोगों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। हमारे स्टैंड की व्याख्या करते हुए पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 22 अप्रैल को आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा था कि आम आदमी आवश्यक वस्तुओं, खासकर खाद्यान्नों की बढ़ती महंगाई की मार से पीड़ित है। लेकिन दोनों केन्द्र व राज्य सरकारें कीमतों में बढ़ोतरी को रोकने के लिए कदम उठाने की बजाए जिम्मेदारी से बचने के लिए कुतर्कों का सहारा ले रही हैं जबकि बेईमान व्यापारियों, जमाखोरों, कालाबाजारियों और तिकड़मबाजों द्वारा मनमाने ढंग से कीमतें बढ़ाए जाने के प्रति आँख बंद किए रहती हैं क्योंक यही लोग तो सत्ता में पहुंचाने के लिए इन पार्टियों को धन मुहैया कराते हैं। भलीभांति जानते हुए भी कि पैट्रोल-डीजल की खुदरा कीमतों में बढ़ोतरी महंगाई को और भी बढ़ा देगी केन्द्र सरकार ने ठीक यही किया है, इसके लिए बजट घाटे को कम करने का बहाना बनाया जाता है जबकि इसका कारण कार्पोरेट सैक्टर के लिए वित्तीय प्रोत्साहनों को झड़ी लगा देना है। केन्द्र और राज्य सरकारें, दोनों चाहे सत्तासीन पार्टियों के झण्डे का रंग कोई भी हो सभी शासक पूंजीपतियों और बड़े व्यापारियों की सेवा में लगी हैं। असल में ये सभी चुनावों में शोषक वर्ग का वदरहस्त प्राप्त करने के लिए एक दूसरी से प्रतियोगिता कर रही हैं। इसलए जब सत्ता में होती हैं सीपीआई(एम) सहित ये तमाम पार्टियाँ नितांत जनवरोधी नीतियों को लागू करती हैं लेकन जब विपक्ष में होती हैं तो जनता को गुमराह करने के लिए उन्हीं नीतियों का विरोध करने का स्वांग भरती हैं। इसके विपरीत, हमारी पार्टी लम्बे अरसे से केन्द्र और राज्य दोनों सरकारों की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ एक के बाद एक संगठित, दीर्घस्थाई जन संघर्ष और वर्ग संघर्ष संचालित कर रही है।

हाल ही में सीपीआई(एम) ने आंदोलन का दिखावा शुरू किया है और कुछ अन्य गैर-भाजपा, गैर-कांग्रेसी पार्टियों के साथ मिलकर 27 अप्रैल को भारत बंद का आह्वान किया है। ये वही पार्टियाँ हैं जिन्होंने सत्ता में रहते हुए उन्हीं जनविरोधी नीतियों को लागू किया था। यह करने के लिए अब सीपीआई(एम) क्यों बाध्य हुई? साफ है आंदोलन संगठित करने की सदइच्छा से यह कदम नहीं उठाया गया है बल्कि कुछ अन्य मजबूरियां हैं। सबसे पहली है, सीपीआई(एम) धूल में मिल गई अपनी छवि को निखारना चाहती है। दूसरी बात है, संसदीय चुनावों में मुंह की खाने के बाद अपनी पार्टी-पांति के गिरते मनोबल को उठाने की इसे जरूरत हैं। तीसरी है, बहुप्रचारित तीसरे मोर्चे को संबल देने का यह प्रयास कर रही है जो पिछले चुनावों में पूरी तरह ध्वस्त हो गया था। मकसद साफ है कि तीसरे मोर्चे के कुछ घटकों के जोड़तोड़ से आगामी विधानसभा चुनावों में अपनी संभावनाओं को बेहतर करना और कांग्रेस-नीत केन्द्रीय सरकार के साथ अपनी मोल-भाव की ताकत को बढ़ाना। और अंतिम है सीपीआई(एम) आंदोलन का यह नाटक कर के आंदोलन के असल रास्ते से लोगों का ध्यान बटाने और गुमराह करने का प्रयास कर रही है।

इन हालात में निम्नलिखित मांगों पर देश के विभिन्न राज्यों में हमारी पार्टी द्वारा शुरू किए गए संघर्षों की निरंतरता में तथा उन्हें और भी तीव्र करने के लिए हम 27 अप्रैल को देशव्यापी आम हड़ताल का आह्वान करते हैं।

मांगे : 1. जमाखोरों, बेईमान व्यापारियों, कालाबाजारियों के खिलाफ तुरंत कड़े कदम उठाए जाएं और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से खाद्य पदार्थों और दैनिक उपभोग की अन्य वस्तुओं की आपूर्ति उचित दरों पर सुनिश्चित की जाए। 2. खाद्यान्नों और अन्य आवश्यक वस्तुओं में व्यापक स्टेट ट्रेडिंग चालू की जाए। 3. शिक्षा का निजीरकण, व्यापारीकरण और आठवीं कक्षा तक पास-फेल प्रणाली को हटाना बंद करो। 4. यौन शिक्षा वापस लो। 5. स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण की नीति और तीन साला मेडिकल कोर्स लागू करने के फैसले को निरस्त करो। 6. तमाम बंद फैक्ट्रियों और संस्थानों को खोलो और तमाम छंटनी किए गए तथा ले-आफ किए गए मजदूरों को बहाल करो। 7. रोजगार दो या बेरोजगारों को उचित बेरोजगारी भत्ता दो। 8. पैट्रो-उत्पादों के दाम घटाओ, उर्वरकों में सरकारी अनुदान बढ़ाओ। 9. तमाम जनवादी आंदोलनों के खिलाफ दमन बंद करो। 10. ग्रीन हंट ऑपरेशन के जरिए पीड़ित आदिवासी लोगों का दमन करना बंद करो।

पार्टी स्थापना दिवस देशभर में ...(पृष्ठ 1 का शेष)

बिहार

26 अप्रैल को पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजन पटना के गाँधी मैदान में किया गया। सभा के मुख्य वक्ता एस यू सी आई (कम्युनिस्ट) के केन्द्रीय कमिटी सदस्य कॉमरेड सत्यवान थे। एस यू सी आई (कम्युनिस्ट) को देश की एकमात्र सही कम्युनिस्ट पार्टी बताते हुए सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि क्रांति के लिए सही नजरिया, सही दृष्टिकोण और सही क्रांतिकारी पार्टी का होना अत्यावश्यक है। बगैर इसके क्रांति नही हो सकती। इस धारणा को पार्टी के पूर्व महासचिव कॉमरेड नीहार मुखर्जी ने आगे बढ़ाया।

उन्होंने कहा कि केन्द्र व राज्य में जो भी सरकारें हैं, वे महंगाई को रोकने के लिए कुछ भी कदम नहीं उठा रही हैं। वे जमाखोरों, कालाबाजारियों, सट्टेबाजों को लूट की खुली छूट देकर मूक दर्शक बनी हुई हैं। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) जनजीवन के ज्वलंत सवालों को लेकर एक के बाद एक आंदोलन संगठित करती रही है। इसी कड़ी में 27 अप्रैल को आम हड़ताल का आह्वान किया गया है। सीपीएम सहित जिन 13 पार्टियों ने भारत बंद का आह्वान किया है, वे अपने-अपने शासित राज्यों में जनता पर जनविरोधी नीतियों को थोपती रहीं हैं, जनता के जनवादी आंदोलनों को लाठी-गोली से दबाती रही हैं। इसलिए आज एक सही नेतृत्व की जरूरत है, जो लोगों को अपनी शक्ति का निर्माण कर सके ताकि जन आंदोलनों को विकसित करने के क्रम में इस शोषण पर आधारित पूँजीवादी राजसत्ता से निजात मिल सके।

सभा की अध्यक्षता पार्टी के वरिष्ठ राज्य कमिटी सदस्य कॉमरेड अरुण कुमार सिंह ने की। सभा में महंगाई सहित केन्द्र व राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 27 अप्रैल को आहूत देशव्यापी आम हड़ताल तथा बंद पर एक प्रस्ताव राज्य कमिटी सदस्य कॉमरेड दीपक कुमार ने पेश किया। इस मौके पर कॉमसोमोल ने सर्वहारा के महान नेता, इस युग के महान मार्क्सवादी चिंतक, हमारे शिक्षक, पथप्रदर्शक तथा एस यू सी आई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

उड़ीसा

24 अप्रैल को भुवनेश्वर के पीएमजी स्केयर में पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजन किया गया। उड़ीसा राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड धुर्जटी दास ने सभा की अध्यक्षता की। हमारी पार्टी द्वारा अखिल भारतीय आम हड़ताल के आह्वान पर एक प्रस्ताव कॉमरेड रघुनाथ द्वारा पेश किया गया जिसका समर्थन कॉमरेड विष्णु दास ने किया दोनों ही उड़ीसा राज्य कमेटी के सदस्य हैं। पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड असित भट्टाचार्य सभा के मुख्य वक्ता थे। सभा शुरू होने के पहले कॉमसोमोल स्वयंसेवकों ने गार्ड ऑफ आनर दिया।

राजस्थान

26 अप्रैल को सर्वोदय भवन, जयपुर में पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजन किया गया जिसमें उदयपुर, कोटा, झुन्झनु, अलवर, चुरू, जयपुर, जोधपुर और बीकानेर जिलों से आए सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ताओं, समर्थकों और हमदर्दों ने हिस्सा लिया। सभा की अध्यक्षता राजस्थान राज्य सांगठनिक कमेटी सचिव कॉमरेड गिरजेश्वर सिंह ने की। यहाँ भी पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड असित भट्टाचार्य मुख्य वक्ता थे।

दिल्ली

25 अप्रैल को गांधी शांति प्रतिष्ठान हाल में पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉमरेड प्राण शर्मा ने की। सभा के मुख्यवक्ता थे केन्द्रीय कमेटी सदस्य और हरियाणा राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड सत्यवान। सभा को दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी सचिव कॉमरेड प्रताप सामल ने भी सम्बोधित किया।

दिल्ली

मध्यप्रदेश

सागर : एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की जिला समिति के तत्वावत्धान में 24 अप्रैल को पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर शासकीय हाई स्कूल तिली के सामने आमसभा आयोजित की गई। आम सभा की शुरूआत कॉमरेड शिवदास घोष को क्रांतिकारी श्रद्धांजलि देते हुए की गई।

सभा की अध्यक्षता पार्टी के सागर जिला सचिव कॉमरेड राम अवतार शर्मा ने की आम सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी की राज्य सांगठनिक समिति के सचिव कॉमरेड उमा प्रसाद।

गुना : 29 अप्रैल को गुना स्थित अग्रवाल धर्मशाला हाल में पार्टी स्थापना सभा का आयोजन किया गया जिसमें गुना, ग्वालियर, अशोक नगर आदि जिलों में सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ताओं, समर्थकों ने हिस्सा लिया। सभा की अध्यक्षता ग्वालियर जिला इंचार्ज कॉमरेड सुनील गोपाल ने की। दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी सचिव कॉमरेड प्रताप सामल मुख्य वक्ता थे। अन्य वक्ताओं में कॉमरेड प्रदीप आरबी और लोकेश शर्मा थे।

गुजरात

24 अप्रैल को अहमदाबाद में टाऊन हाल के पास पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजन किया गया। गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉमरेड भरत मेहता ने सभा की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता पार्टी की स्टाफ सदस्या कॉमरेड छाया मुखर्जी थी। सभा को कॉमरेड्स मीनाक्षी जोशी, तपन दास गुप्ता, सत्येन्द्र सिंह, मालिक राजा ने भी सम्बोधित किया। कॉमरेड रघु बागुल ने डांग जिले के आदिवासियों की समस्याओं के बारे में वक्तव्य रखा। राज्य सचिव कॉमरेड द्वारका नाथ रथ ने राज्य में व्याप्त पीने के पानी की समस्या के बारे में बताया। उन्होंने कच्छ, सौराष्ट्र साणंद आदि के किसानों, लिंक (हैल्थ) वर्कर्स, सरकारी कर्मचारियों, एएमटीएस वर्कर्स और अन्य आंदोलनों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया।

महाराष्ट्र

मुम्बई : 25 अप्रैल को मुम्बई में पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजन सोशल लीग स्कूल दामोदर हाल, परेल में किया गया। सभा में मुम्बई के विभिन्न इलाकों से आए पार्टी कॉमरेडों, समर्थकों और हमदर्दो ने हिस्सा लिया। पार्टी की मुम्बई युनिट के इंचार्ज कॉमरेड ए. के. त्यागी ने सभा की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता थे गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी सचिव कॉमरेड द्वारका नाथ रथ। कॉमरेड के कुलश्रेष्ठ और कॉमरेड जयराम विश्वकर्मा ने भी सभा को सम्बोधित किया।

नागपुर : 28 अप्रैल को नागपुर के राष्ट्रभाषा भवन में पार्टी स्थापना दिवस सभा का आयोजित किया गया। सभा की अध्यक्षता कॉमरेड माधव भौंडे ने की। पार्टी की स्टाफ सदस्या कॉमरेड छाया मुखर्जी सभा की मुख्य वक्ता थी।

पंजाब

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी का स्थापना दिवस 24 अप्रैल को बुडलाढा में मनाया गया। कॉमरेड अमिन्दर पाल सिंह, इंजार्च पंजाब राज्य ने सभा की अध्यक्षता की।

कॉमरेड प्रताप सामल, पार्टी के दिल्ली के दिल्ली राज्य सचिव मुख्य वक्ता थे। कॉ. इन्द्रसिंह ने भी सम्बोधित किया।

सभी जगह सभाओं की शुरूआत कॉमरेड शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण और उन पर रचित गीत से हुई। सभाओं का समापन अंतर्राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ।

इलाहाबाद (यूपी) में पार्टी स्थापना दिवस पर आयोजित जनसभा का एक दृश्य

व्यक्तिवाद से लड़ते हुए सामूहिक जीवन, सामूहिक चिन्तन व सामूहिक आचरण हमें अपनाना है, जनता में जाना है और जनता को संगठित करना है

भिवानी में 24 अप्रैल को आयोजित जनसभा में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

कॉमरेड सभापति, कॉमरेडस और दोस्तो,

ऐसे तो कोई पार्टी स्थापना दिवस नहीं मनाती है लेकिन हम मनाते हैं इसका कारण क्या है यह पहले समझना चाहिए। हर पार्टी दुनिया भर में कभी जब क्रांति हो जाती है तो क्रांति का दिन मनाती है। मनाना भी चाहिए। मनाना उचित है। मनाने का मतलब क्या है? क्रांति के बाद जब हम क्रांति का दिवस मनाते हैं जैसे नवम्बर क्रांति दिवस, तो इसका मतलब है कि क्रांति का जो लाभ या फायदा हुआ, उससे जो मिला, हम जिसे कहते है एचिवमैन्ट यानी उपलब्धि , उसे संगठित करना, उसे और भी आगे बढ़ाना। क्रांति के बाद पार्टी का काम है क्रांति से जो फसल हमें मिली उसे संभालना, उसे आगे बढ़ाना। लेकिन हम क्रांति से पहले पार्टी का स्थापना दिवस मनाते हैं। क्यों मनाते हैं? इसलिए कि जो पार्टी क्रांति करेगी, उसके जन्मकाल से ही क्रांतिकारी आन्दोलन शुरू हो जाता है। अत: यह क्या बात कि हम शुरूआत का दिन नहीं मनाएंगे और आखिरी का दिन मनाएंगे क्योंकि उस दिन लोगों को मुक्ति मिल गई, लोग खुश हो गए। जबकि तकलीफ का समय, संघर्ष का समय पार्टी स्थापना के साथ साथ शुरू हो जाता है। कोई क्रांतिकारी पार्टी किसी भी देश में जब से स्थापित होती है, क्रांतिकारी आन्दोलन उस देश में तभी से शुरू हो जाता है। हमारे देश का इतिहास भी ऐसा ही है। क्रांतिकारी नामधारी बहुत पार्टियां थी, खासकर सयुंक्त सीपीआई का नाम आपने सुना होगा, इसके अलावा रिवोल्युश्नरी सोशलिस्ट पार्टी (RSP) थी (रिवोल्युशनरी कम्युनिस्ट पार्टी (RCP) थी, बोल्शेविक पार्टी थी, पीजेन्टस एण्ड वर्कर्स पार्टी थी। ऐसी अनेक पार्टियां थी लेकिन क्रांतिकारी पार्टी, जिसे हम कहते हैं सर्वहारा वर्गीय क्रांतिकारी पार्टी, लेनिनीय मॉडल की पार्टी, जिसका सांगठनिक आधार होता है जनवादी केन्द्रियता (डैमोक्रेटिक सैन्ट्रलिज्म) और जिसके नेतृत्व की धारणा होती है–सामूहिक नेतृत्व, ठोस रूप मे जिसका व्यक्तिकरण होता है किसी व्यक्ति के माध्यम से, इस आधार पर हमारे देश में पहले पहल सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया का जन्म हुआ जिसका नाम बदल कर अब हुआ है सोशलिस्ट यूनिटी सैन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट)। तब से हमारे देश मे क्रांतिकारी आन्दोलन शुरू हुआ। पश्चिम बंगाल के एक कोने मे एक छोटे से शहर जयनगर में इसकी स्थापना हुई थी। तब पार्टी बहुत छोटी थी। आज पार्टी बहुत बढ़ चुकी है। आज हरियाणा में जो हम स्थापना दिवस मना रहें हैं, आज ही नहीं हर साल हम मनाते हैं, बहुत संघर्ष भी किए हैं। ऐसे ही पंजाब में, दिल्ली में, तमाम भारत में तमिलनाडु से शुरू करके पंजाब तक, आसाम त्रिपुरा से लेकर महाराष्ट्र तक हमारी पार्टी बढ़ रही है। कारण क्या है? इसका कारण हमे ढूंढ़ना चाहिए। अगर कारण हम ढूंढ़ पाए तब समझ पाएंगे कि हमें क्या करना चाहिए। पहला कारण यह है कि पार्टी का जो विचार है, जो रास्ता है वह सटीक है। रास्ता अगर सटीक न हो, संघर्ष की दिशा अगर सही न हो तो संघर्ष कभी सफल नही हो सकता चाहे कितनी भी जान दो, कितना भी खून बहाओ आन्दोलन सफल नही हो सकता।

आज हमारी पार्टी बढ़ रही है। पूरे देश भर में पार्टी का काम चल रहा है। देश में बड़े बड़े जो राज्य हैं उन सभी प्रदेशों में हमारा काम है। छोटे मोटे कुछ राज्य बचे हुए हैं, वहां भी प्रयास चल रहा है। जबकि आप ख्याल करके देखेंगे तो यह पता चल जाएगा और आप आसानी से समझ जाएंगे कि चाहे कांग्रेस या बीजेपी जैसी बुर्जुआ पार्टियां हों या सीपीआई हो या सीपीआई(एम) या नक्सलों जैसी पेटी बुर्जुआ पार्टियां, तमाम बुर्जुआ–पेटी बुर्जुआ पार्टियां टूट रही हैं। बीजेपी का क्या हाल हो रहा है यह तो आप देख ही रहे हैं, कांग्रेस भी टूट रही है। जितनी भी बुर्जुआ पार्टियां हैं, वे सभी टूट रही हैं चाहे मुलायम सिंह की पार्टी हो या लालू प्रसाद की हो। ये एक समय बहुत बढ़ती हैं , फिर खत्म हो जाती हैं। चन्द्रबाबू नायडू एक जमाने मे बहुत उभरकर आ गए थे, अब चले गए, इन सब पार्टियों में ऐसा ही होता है। ये सभी बुर्जुआ पार्टियां तो टूट ही रही हैं। यहां तक कि सीपीआई, सीपीआई(एम) जो कम्युनिस्ट नामधारी पार्टियां हैं, पेटी बुर्जुआ पार्टियां हैं, वे भी टूट ही रही हैं, अब तक उनकी दिखावे की ताकत तो है क्योंकि सत्ता में हैं सरकार में हैं चाहे पश्चिम बंगाल में हों या केरल में या त्रिपुरा में। लेकिन अगर वे पश्चिम बंगाल में चुनाव में हार जाएं और हारने की नौबत भी आ गई है, उनके हारने का समय आ गया है, इस बार चुनाव में वे अगर हार गए तो आप देखोगे कि उनका क्या हाल होगा। क्यों? ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि ये सब कम्युनिस्ट नामधारी पार्टियां पेटी–बुर्जुआ पार्टियां हैं। ये मजदूर वर्ग की पार्टी जिस तरह बनती है उस तरह बनी ही नहीं हैं। लेनिनीय तरीके से, लेनिन ने जो रास्ता दिखाया उस रास्ते से उन्होंने इन पार्टियों को नहीं बनाया। वह रास्ता क्या है इस विषय पर मैं बाद में बात रखुंगा। अत: ये पेटी बुर्जुआ पार्टियां भी टूट रही हैं। इसके दो कारण हैं। एक है, इनका लोगों पर भरोसा नही है और लोगों का भी इन पर भरोसा नहीं है। यह है एक नम्बर मूल बात। इसके अलावा एक और मूल बात है। इन बुर्जुआ–पेटी बुर्जुआ पार्टियों का आधार है व्यक्तिवाद। उनकी जो संस्कृति है वह है व्यक्तिवाद। यह व्यक्तिवाद आज भयंकर प्रदूषित (Poluted) हो गया है जैसा कि कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें बार बार बताया। इसलिए क्या होता है कि इन सब पार्टियों में एक एक व्यक्तिवादी नेता है, उनके इर्द गिर्द एक एक गुट है और उन गुटों में लड़ाई–झगडा, गुटबाजी रहती है। जब तक ये गुट मिल कर चल सकते हैं तब तक पार्टी एकजुट रहती है, पार्टी की एकता बनी रहती है और जब इनका एक साथ चलना संभव नही रहता तब पार्टी टूट जाती है। कांग्रेस भी कितनी बार टूटी, –पुरानी (ओल्ड) कांग्रेस, नई (न्यु) कांग्रेस, इन्दिरा कांग्रेस, फिर इससे और कुछ निकल गए। पश्चिम बंगाल में आपने देखा यह तृणमूल कांग्रेस इसी से निकल कर आई। ऐसे ही सभी प्रदेशों मे कुछ टुकड़े होकर निकल गए। ऐसा ही होगा। बीजेपी का भी हाल देखो। यह सिन्धिया जो राजस्थान की मुख्यमन्त्री रह चुकी, इससे निकल गई। उमा भारती का भी बीजेपी से विरोध हुआ। किसके साथ किसका विरोध नहीं है? मोदी के साथ आडवाणी का विरोध, आडवाणी का हाल खराब, जसवंत सिंह भी निकल गए। बीजेपी टूट रही है। इन सब पार्टियों के हाथ में अगर सत्ता होती है, सरकार होती है तो ये पार्टियां बड़ी हो जाती हैं। क्योंकि जितने अवसरवादी लोग होते हैं वे कुर्सी के चारों ओर जुट जाते हैं। आपके हाथ में अगर शहद यानि मधु का छत्ता हो तो मधु–मक्खियां आएंगी ही और जब वह टूट जाएगा तब सब भाग जाएंगी, उड़ जाएंगी। सभी बड़ी बड़ी पार्टियों का यही हाल है। लेकिन क्रांतिकारी पार्टी जो सही मायने में मजदूर वर्ग की पार्टी होती है जैसे एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी है जिसकी स्थापना कॉमरेड शिवदास घोष ने की थी, कामरेड शिवदास घोष ने जिसे बनाया उसमें ऐसा नहीं होता है। इसमें व्यक्तिवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। फिर भी समाज से जब व्यक्तिवाद का प्रभाव हम पर आता है, ऐसी बात नही है कि इस माहौल में यह प्रभाव हम पर नहीं आता हो, तब व्यक्तिवाद का प्रभाव हमारे अन्दर रहने से पार्टी में जो सामूहिक प्रक्रिया चल रही है उसमें पार्टी के बाकी कामरेड क्या हमें मानेंगें? हमें पार्टी से जाना ही पड़ेगा चाहे कितना भी बड़ा नेता हो। जो व्यक्तिवादी हो जाएगा, क्रांतिकारी चिन्तन को छोड़कर, मजदूर वर्ग के हित को छोड़कर अगर वह व्यक्ति स्वार्थ को बढ़ाने का प्रयास करेगा चाहे नेता बनकर हो, पैसा जमा करके हो, चाहे कुछ भी करके हो तो उसके लिए इस पार्टी में स्थान नहीं है चाहे कितना भी बड़ा नेता हो। लेकिन उन सब पार्टियों मे ऐसा नहीं है। यह क्रांतिकारी पार्टी, जिसे हम सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी कहते हैं, इसका सांस्कृतिक आधार ही यह है। कॉमरेड शिवदास घोष ने इसी संस्कृति की रचना की। इसलिए अगर आप पूरे देशभर में जाओ, वहां घूम कर आओ जहां हमारी पार्टी है, पार्टी कॉमरेडों से मिलकर आओ तो देखोगे कि एक ही प्रकार की संस्कृति है चाहे वे हरियाणा के कॉमरेड हों या ग्वालियर के कॉमरेड हों या मद्रास के, बैंगलोर के हों या कलकता के कॉमरेड। आप वहां अगर जाएं तो आप देखेंगे, आपको लगेगा कॉमरेडों का एक ही प्रकार का भाषण, एक ही प्रकार का आचरण–व्यवहार, एक ही प्रकार की संस्कृति। यह जो एक महान संस्कृति का सृजन कामरेड शिवदास घोष ने किया है उसी को आधार करके हमारी पार्टी इतनी बड़ी हुई है । इस संस्कृति को देखकर आम जनता में पार्टी के प्रति एक आकर्षण पैदा होता जा रहा है कि हां यह संस्कृति, यह कल्चर हमें चाहिए । व्यक्तिवाद से, व्यक्तिगत सुविधाभोगी मानसिकता, खुदगर्जी (selfishness) , व्यक्तिकेन्द्रित चिन्तन से यानी मेरे सिवा दुनिया में और कोई नहीं हो, तमाम चीजें सिर्फ मेरे लिए हों–यह जो मानसिकता है इससे इन्सान इन्सान के बीच प्यार भी खत्म हो जाता है। कोमल, सुन्दर, सुकुमार अनुभूतियां, प्यार–मोहब्बत–स्नेह वगैरह सब खत्म हो जाता है। यहां तक कि जिसे हम संजीदगी (sincerity), ईमानदारी (honesty) कहते हैं वह भी खत्म हो जाती है, आदमी धीरे–धीरे बेईमान बन जाता है, चोर बन जाता है। इसलिए देखिए आज जो यह आईपीएल करके मंत्री–संत्री सब भ्रष्टाचार में संलिप्त हो गए, थरूर, मोदी, यह सब पैसे के पीछे लगे हैं, उसकी इन्क्वारी चल रही है। चरित्र

(शेष पृष्ठ 4 पर)

माओ त्से तुंग ने व्यक्तिगत हिंसा, व्यक्ति का खून कर देने, मारने के लिए कभी नही कहा

(character) खत्म हो गया है। किसी के बारे में पता चल जाता है, किसी के बारे में पता नहीं चल पाता है। जो चालाक है उसके बारे में पता नही चलेगा, जो लापरवाह है वह जब चोरी करता है तब पता चल जाता है। इतनी ही बात है। नहीं तो ये सभी भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे हुए हैं। समाज जब गिरता है, एक व्यवस्था जब मरणासन्न हो जाती है तब यह पतनशील हो जाती है जैसे कि आज पूंजीवाद हो गया है-यह लेनिन ने दिखाया, स्टालिन ने दिखाया, माओ और कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया। तब से लेकर आज तक इतने साल हो गये, सौ साल बीत गए, यह जब से मरणासन्न हुआ है सड़-गल रहा है। उसमें सब कुछ का ही पतन होगा। भ्रष्टाचार उस पर छा जाएगा, छा गया है। जिसमें भ्रष्टाचार न हो ऐसा कोई विभाग नहीं है। शिक्षा विभाग में भी भ्रष्टाचार है। इस स्थिति में क्या हो रहा है? इन सब पार्टियों में जिस तरह गुटबाजी हो रही है उसके साथ-साथ भ्रष्टाचार भी भयंकर रूप में बढ़ रहा है। सीपीआई(एम) की केरल राज्य कमेटी के सचिव पिन्नरई जब बिजली मन्त्री थे तब उन्होंने कई करोड़ रुपये का घोटाला करके अपनी जेबें भर ली थी। आज उनकी ही पार्टी के एक नेता जो आज मुख्यमन्त्री हैं अच्युतानन्द उन्होंने यह मामला उठाया है, जांच बिठाई हुई है। पश्चिम बंगाल सीपीआई(एम) पार्टी में कितना भ्रष्टाचार है लेकिन यह उनकी खुशकिस्मती है कि उनकी कोई जांच नहीं हुई है। अगर जांच हुई होती तो पता चल जाता कि पश्चिम बंगाल में क्या चल रहा है। इन सब कारणों से लोग उन पर अब कोई भरोसा नहीं करते हैं। वोट से वे जीत जाते हैं। वोट का मामला दूसरा है। जनता क्या करे और कोई विकल्प नहीं है, वोट देनी पड़ती है, या तो कांग्रेस को देनी है या इनेलो को या किसी और को देनी है वोट तो किसी न किसी को देनी ही है। क्या करें? और पैसों का भी मामला है। चुनाव मे हेराफेरी, धांधली मेन्युपुलेशन सब कुछ होता है। लेकिन जनता का इनमें से किसी पार्टी पर भरोसा नही है। लेकिन हमारी पार्टी पर है। यहां कुछ नहीं मिलता है-ऐसी बात नहीं कि कुछ नहीं मिलता, कुछ नहीं मिलता तो आएंगे ही क्यों? कुछ नहीं मिलता का मतलब है पैसा, जमीन, जायदाद, बैंक बैलेंस-यह सब नहीं मिलता है, यहां तक कि नगर निगम का पार्षद बनना, यह भी नहीं होता है, एमएलए, एमपी बनना तो दूर की बात रही। तब भी लोग आते हैं। क्यों? इसलिए कि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) को देखकर उन्हें भरोसा हो गया है कि यहां हमारी मुक्ति होगी, जो हमें चाहिए वह मिलेगा। हमें पैसा नहीं चाहिए। हमें इज्जत की जिन्दगी चाहिए। हमें प्रेम चाहिए। हमें मोहब्बत चाहिए। हमें अच्छा, सुन्दर जीवन चाहिए। वह जीवन कहां है ? यहां सब कुछ टूट रहा है, सब कुछ तहस-नहस हो रहा है, नष्ट हो रहा है। क्योंकि यह व्यवस्था ही खत्म हो रही है। इसके साथ ही सब कुछ खत्म हो रहा है। इन्सानियत भी खत्म हो रही है। इस व्यवस्था को उखाड़ फेंकने का रास्ता कौन दिखा सकता है और इस रास्ते पर चलने की ताकत भी कौन दे सकता है-वह पार्टी है एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) और वह रास्ता कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया। यह बात जहां भी जा रही है वहां सभी लोग समझ रहें हैं कि यह सही रास्ता है, हमारी मुक्ति का रास्ता है। पूंजीवाद जब तक कायम रहेगा तब तक हमें मुक्ति नहीं मिलेगी, हमारी जिन्दगी बरबाद हो जाएगी, तबाह हो जाएगी, खत्म हो जाएगी, इसलिए पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना ही मुक्ति का रास्ता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने वही रास्ता दिखाया है। अन्य किसी पार्टी ने नहीं दिखाया। बाकी सभी पार्टियां तो लोगों को गुमराह कर रही हैं। ये माओवादी जो कर रहे हैं मुक्ति का रास्ता मुश्किल बना रहे हैं। पुलिस-प्रशासन और सरकार के हाथों में एक हथियार थमा रहे हैं ताकि असली क्रांतिकारी आन्दोलन को दबाया जा सके। असल में हो क्या रहा है? कुछ सैनिकों को मार डाला, कुछ सीआरपी वालों को मार दिया, इससे क्या क्रांति हो गई? बेरोजगारी खत्म हो गई? महंगाई कम हो गई? क्या कुछ हुआ? नहीं बल्कि इससे जनता में एक गलत भावना, एक गलत चिन्तन, एक गलतफहमी, प्रचार माध्यमों से पूंजीपति वर्ग फैला रहा है कि देखो मार्क्सवादी क्या करते हैं। देखो, ऐसे होते हैं कम्युनिस्ट। क्या कुछ मासूम लोगों को मार देना क्रांति है? लोग कहेंगें कि हां यह तो क्रांति नहीं है। असल में है भी नहीं। यह रास्ता माओ त्से तुंग का नहीं है। माओ त्से तुंग ने व्यक्तिगत हिंसा, व्यक्ति का खून कर देने, मारने के लिए कभी नही कहा। मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्टालिन-माओ-शिवदास घोष इनमें किसी भी मार्क्सवादी चिन्तनकार ने व्यक्ति को मारने की बात कभी नही कही, बल्कि विरोध किया। कोई इसको क्रांतिकारी लाइन नहीं मानता। मार्क्सवाद यह मानता है कि जब सचेत जनता, संगठित जनता, शोषित जनता तमाम जनता जब हथियार उठा कर इस व्यवस्था को उखाड़ फेंकेगी-जिसे हम कहते हैं जन अभ्युत्थान (Mass insurrection)- वह होता है क्रांति का रास्ता। व्यक्ति का खून करके क्या होगा? मान लो टाटा को मार दिया तो इससे क्या हुआ? क्या पूंजीवाद खत्म हो गया? टाटा के स्थान पर कोई दूसरा आदमी आ जाएगा। इससे क्या होगा? कुछ भी फर्क नहीं पड़ेगा। अगर आप टाटा को न भी मारो तब भी वह एक दिन खुद ही मर जाएगा। क्या वह सदा जिन्दा रहेगा। एक न एक दिन तो मरेगा ही। पर मरने से क्या होता है। बिड़ला मर गया तो क्या हुआ? बिड़ला के लड़के मालिक बन गए। ऐसे किसी को खत्म करके किसी व्यवस्था को खत्म नहीं किया जा सकता है। यह तो साधारण सी बात है, मामूली सी बात है। एक स्कूली बच्चा भी यह बात समझता है। जबकि ये लोग ऐसा कर रहें हैं। जब मजदूर, किसान, छोटे किसान, गरीब किसान, ये सब मेहनतकश लोग हिन्दू-मुसलमान में बंटे हुए हैं, झगड़ा-फसाद कर रहे हैं, एक दूसरे को मार रहे हैं, जात-पात मे बंटे हुए हैं, जात-पात को लेकर झगड़ा, मार-पिटाई कर रहे हैं, तूने मेरी लड़की से शादी कर ली लड़के-लड़की को मार दो - यही तो चल रहा है। ऐसी स्थिति में क्या वे क्रांति शुरू कर सकते हैं? जनता को इन तमाम पुरानी भावना-धारणा, पुराने चिन्तन, सामन्ती आचरण-व्यवहार से मुक्त करके एक क्रांतिकारी चिन्तन से लैस करके, एक नई संस्कृति के आधार पर संगठित करके जब तक आन्दोलन नहीं होगा और जनता हथियार नहीं उठाएगी तब तक क्रांति नहीं होगी। यह कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार दिखाया है। यह है सही लाइन।

दूसरी बात जो कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखायी वह यह है कि पूंजीवाद हमारे देश का दुश्मन है। यह पूंजीवादी देश है। यह महज पूंजीवादी देश ही नहीं रहा है बल्कि आज भारत का पूंजीवाद साम्राज्यवाद के स्तर पर जा पहुंचा है। बहुत दिन पहले कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने जीवन काल में ही दिखाया था कि भारत के पूंजीपति विदेश मे पूंजी का निर्यात कर रहे हैं। लेनिन ने दिखाया था कि पूंजी का निर्यात ही साम्राज्यवाद होता है। अगर किसी सामान या माल का विदेश में निर्यात कर दिया जाता है तो इसी से साथ ही साथ वह साम्राज्यवादी देश नही हो जाता है। लेकिन जब आप दूसरे देश में पूंजी लगाते हैं, पूंजीनिवेश करते हैं, वहां के सस्ते कच्चे माल और सस्ती श्रम शक्ति का आप शोषण करते हैं तो वह है साम्राज्यवाद। टाटा आज इतना बड़ा एकाधिकारी पूंजीपति घराना बन गया कि इंग्लैण्ड मे कोरस नाम की बहुत बड़ी स्टील कम्पनी को खरीद लिया है। वह कह रहा है कि हम सिर्फ अफ्रीका एशिया में ही नहीं लैटिन अमेरिका और यूरोप में भी पूंजी निवेश करेंगे। ये टाटा बिड़ला गोयनका में से कौन नहीं जिसने विदेश मे पूंजी नहीं लगाई हुई है, इस बजाज को ही ले लीजिए अगर आप श्री लंका के कोलम्बो जाएं तो देखेंगे कि तमाम ऑटो रिक्शा बजाज के हैं। भारत पूंजीवादी देश तो है ही, यहां के पूंजीपति साम्राज्यवादी बन गए हैं। जहां पूंजीवाद ने साम्राज्यवादी रूप ले लिया है, वहां अगर कोई ये कहे कि विदेशी साम्राज्यवाद और सामान्तवादी व्यवस्था के खिलाफ लडाई है, जैसे सीपीआई, सीपीआई(एम), नक्सल के जो चारों पांचों धड़े हैं, उन सबकी लड़ाई है विदेशी साम्राज्यवाद और देशी सामन्ती प्रभुओं के खिलाफ तो वे बतायें कि कहां है सामन्ती प्रभु ? हरियाणा में आप खोजिए। जिन लोगों के हाथों मे जमीन है वे ज्यादातर मधयमवर्ग के हैं और विशाल जमीन किसी के पास अगर है भी तो वह सामन्ती प्रभु नहीं है। तब वह क्या है? जिस तरह कारखाने में कारखाना मालिक मजदूरों की मजदूरी को खरीदते हैं, श्रम शक्ति खरीदते हैं उसी तरह जमीन में भी बड़े किसान खेत मजदूरों की मजदूरी को खरीदते हैं। वहां भी मालिक मजदूर का संबन्ध है। जबकि सामन्ती व्यवस्था में ऐसा नहीं था। सामन्ती प्रभु की जमीन पर जो सब मेहनतकश लोग होते थे वे सारे ही थे भूदास। वे जमीन के साथ बंधे हुए थे। जमींदार की अनुमति के बिना वे कहीं जा नहीं सकते थे। अब वह व्यवस्था हमारे देश में है नहीं। पूरा पूंजीवाद है। कारखाने में तो पूंजीवाद है ही। जहां सामन्तवाद में जो उत्पादन होता था वह सिर्फ उपभोग के लिए, मतलब खाने के लिए होता था। बाकी जो बचता था बेचना पड़ता था क्योंकि उसे बेचकर कपड़ा-गहना आदि खरीदने के लिए पैसा चाहिए सामन्तवाद में उपभोग के लिए सब कुछ पैदा किया जाता था। लेकिन पूंजीवाद में औद्योगिक उत्पादन तो मुनाफे के लिए होता ही है बल्कि यह जमीन की फसल भी मुनाफे के लिए उगाई जाती है। मुनाफा कैसे आता है ? मजदूर का शोषण करके आता है। यहां सामन्तवादी व्यवस्था के खिलाफ लड़ने का मतलब होगा भूतों के खिलाफ

(शेष पृष्ठ 5 पर)

भिवानी

हरियाणा में हुड्डा के राज और बंगाल में बुद्धदेव भट्टाचार्य के राज में कोई फर्क नहीं

लड़ना। यह हो भी रहा है। नक्सली लड़ाई यही है और वे लड़ते लड़ते खुद ही खत्म होते जा रहे हैं। जनता में भ्रान्ति पैदा होती जा रही है। इससे पुलिस प्रशासन को मौका मिल रहा है। इस बहाने असली क्रांतिकारी आन्दोलन का दमन करने का मौका मिल रहा है। यह हो रहा है। उधार सीपीआई, सीपीआई(एम) तो संसदीय राजनीति मे फंस गईं। पूंजीवादी सरकारें जहां जहां हैं चाहे कांग्रेस की हो या बीजेपी की उनसे सीपीआई(एम) सरकार का कोई तफर्का नहीं है, कोई फर्क नहीं है, कोई अलग बात नहीं है– यह आप जानते हैं। अगर आप नहीं जानते तो पश्चिम बंगाल जाइए, कलकता घूम कर आइए तो आप देखेंगे कि हुड्डा के राज और बुद्धदेव भट्टाचार्य के राज, दोनों में कोई फर्क नहीं है। फर्क है तो बस सिर्फ नाम का और झण्डे का–वहां लाल झण्डा है, यहां तिरंगा झण्डा। विदेश से पूंजी लगाने का अनुरोध ये भी कर रहे हैं, विदेशी पूंजी हमारे प्रदेश में यहां कलकता में लगाओ यह अनुरोध बुद्धदेव भट्टाचार्य भी कर रहे हैं। इनमें कोई फर्क नहीं है। विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) के नाम से गरीब किसानों को जबरन बेदखल करके उनकी जमीन हड़पना इधर भी जारी है, उधर भी। तभी तो नन्दीग्राम सिंगूर आन्दोलन हुआ। तब फर्क क्या है? आप केरल मे जाइए। केरल बहुत ही छोटा–सा राज्य है। हरियाणा जितना ही है, थोड़ा–सा बड़ा होगा। वहां जनसंख्या काफी है। खूब सघन आबादी है। वहां सरकार एक बहुत चौड़ी सड़क बना रही है जिसकी कोई जरूरत नही है। अगर चार लाइन की सड़क हो तो वह काफी है। नहीं, वे 8 लेन सड़क बना रहे हैं। इसके लिए दोनों तरफ की जमीनें हथिया रहे हैं, दखल कर रहें हैं। अगर आप कभी केरल गए हों तो देखा होगा। अगर नहीं भी गए हैं तो सुनलो – वहां सड़क के दोनों ओर छोटी–छोटी दुकानें आपको देखने को मिलेंगी। इनमें कहीं चाय बन रही है, कहीं केला भी मिलेगा, इडली–डोसा–बड़ा–सांभर वहां यह सब आपको मिलेगा। उनकी जिन्दगी इस पर चलती है। हम जिसे आजीविका कहते हैं जो रोजी रोटी है, जिन्दगी की गुजर–बसर है, वह इसी से चलती है। इस तरह अगर जमीन दखल करके यह सड़क बनाई गई तो हमने दिखाया कि कई लाख लोगों की रोजी–रोटी चली जाएगी। वे लोग रास्ते के भिखारी बन जाएंगे। उन्हें अगर मुआवजा भी दे दिया जाए तो भी दूसरी जगह दुकान नहीं खरीद पाएंगे क्योंकि सारे केरल में ऐसी छोटी–छोटी दुकानों की भरमार है। भरी पड़ी हैं। वह आन्दोलन हमने किया। त्रिवेन्द्रम से कासरगड तक 60–65 कमेटियां बनाई गई। हमने कहा कि 30 फुट से ज्यादा जमीन नहीं ली जानी चाहिए। इसी में बहुत अच्छी सड़क बन जाएगी। इससे ज्यादा की जरूरत जनता को है ही नहीं। ज्यादा जमीन लेने से जनता का क्या भला हो सकता है? इससे फायदे के बजाये उल्टे जनता का जीवन बर्बाद होगा। इस सड़क के दोनों तरफ ऊंची रेलिंग होगीं। अगर आपकी जमीन है इस तरफ और मकान है उस तरफ तो बैल लेकर आप उस पार जाना चाहेंगे तो जा नही पाएंगे। आपको वह जमीन बेचनी पड़ेगी। सरकार यह सब बना रही है। किस के स्वार्थ में? तो हमने इसका विरोध किया। बहुत बड़ा आन्दोलन हुआ। हमारी पार्टी की महिला कार्यकर्ताओं तक पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया। परसों की खबर है कि सरकार किसानों की मांगे मान लेने के लिए मजबूर हुई है। सरकार ने लोगों की यह मांग मान ली है कि 30 फुट से ज्यादा जमीन अधिग्रहण नहीं की जाएगी। लेकिन मुश्किल यह है कि यह केन्द्र सरकार की परियोजना है। ऐसा आन्दोलन हम सभी जगहों पर कर रहे हैं। जैसे यहां भी हुआ। मातनहेल में थर्मल पावर प्लांट बनाने के लिए जमीन लेने का सरकार ने जो प्रयास किया था। वह हमारे आन्दोलन से ही रुक पाया था। झज्जर के एसईजैड–विरोधी आन्दोलन में हम बार–बार वहां गए। उनको रास्ता दिखाने का एक प्रयास किया। हालांकि अभाव के समय किसानों को सरकार की तरफ से कुछ पैसों का लालच दिखाना, प्रलोभन देना आसान है। इसलिए उन्हें आन्दोलन में लाना कठिन है। लेकिन आन्दोलन करते करते ही हमारी पार्टी यहां आ पहुंची है।

वह जो मैं कह रहा था कि पार्टी के प्रति जनता का भरोसा पैदा होने के दो कारण हैं। एक है, पार्टी की संस्कृति जो व्यक्तिवादी संस्कृति को तोड़कर सामूहिक संस्कृति, समाज के लिए निर्वैयक्तिक दृष्टिकोण व आचरण का जो आधार है, लोग इससे आकर्षित हो रहे हैं, जिस लगन से कॉमरेड लोग काम कर रहे हैं उनकी ईमानदारी भी उन्हें आकर्षित कर रही है। जो चीज समाज में आज देखने को मिल नहीं रही है। आज समाज में ईमानदारी खत्म हो गई है। लेकिन हमारे कॉमरेडों में वे देखते हैं ईमानदारी, जनता के प्रति प्रेम, जनता की समस्याओं को लेकर संघर्ष चाहे उसके लिए पुलिस के लाठी चार्ज में भी मार खाएं, जेल जाएं इसकी भी वे कोई परवाह नहीं करते लेकिन जनहित की रक्षा करनी है। यह जो उनका लडाकू मन है यह लोगों को सबसे ज्यादा आकर्षित करता है। जब और करीब आते हैं तो जानते हैं कि हमारी पार्टी की लाइन पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना है, पूंजीवाद ही लोगों का मूल दुश्मन है, इसी से जन जीवन तबाह हो रहा है। इसको उखाड़ फेंकना पार्टी की लाइन है, संघर्ष है, जनमुक्ति का भी यही रास्ता है। पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना है, समाजवाद लाना है, तमाम उत्पादन व्यवस्था पर तमाम जनता का कब्जा होगा, किसी एक व्यक्ति का नहीं, मेरा नहीं, आपका नहीं, बल्कि सब का कब्जा होगा, सभी का मिलकर मालिकाना होगा और उत्पादन मुनाफे के लिए नहीं, बल्कि जनता की जरूरत के अनुसार होगा। यह जो मूल लाइन है–इस को देखकर लोग हमारी तरफ आकर्षित हो रहे हैं। आन्दोलन ही एक क्रांतिकारी पार्टी का आधार होता है। आन्दोलन के बिना क्रांति नहीं होगी। आन्दोलन, जन आन्दोलन, जनता के ज्वलन्त सवालों को लेकर आन्दोलन चाहिए जैसा कि आज हो रहा है। 27 अप्रैल को हमारी पार्टी की तरफ से हमने देश भर में आम हड़ताल का एलान किया है। यह सभी जगह एक ही दिन होगी। इससे पहले हमने हर प्रदेश मे महंगाई के खिलाफ, बेरोजगारी के खिलाफ, शिक्षा व्यवस्था पर हो रहे हमले के खिलाफ, हस्पतालों यानी स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था को खत्म करने की सरकार की ओर से जो कोशिश जारी है इन सभी के खिलाफ हम लड़ रहे हैं। अब इन सबको मिलाकर इस हड़ताल का आह्वान किया गया है। 13 पार्टियों ने भी सीपीआई, सीपीआई(एम) के नेतृत्व में इस हड़ताल का एलान किया है । दोनों मे फर्क क्या है? बहुत फर्क है, बुनियादी फर्क है–यह आपको समझना चाहिए। एक तो मांगों को देखने से ही पता चल जाता है कि उनमें और हममें कितना फर्क है। उनका एक ही मुद्दा है महंगाई यानी रोजमर्रा की जो जरूरत की चीजें हैं उनकी मुल्यवृद्धि हो रही हैं, भाव बढ़ गए हैं उसके खिलाफ, खासकर पैट्रोलियम उत्पादों के जो रेट बढ़ा दिए हैं, उसके खिलाफ ही उनकी यह हड़ताल है। लेकिन हमारा मुद्दा सिर्फ यही नहीं है। महंगाई के खिलाफ तो हमारी लड़ाई है ही लेकिन शिक्षा–चिकित्सा, बिजली–पानी के लिए भी लड़ाई है। इन सब की वजह से मजदूर–किसानों की हालत क्या हो गई है? देश भर में दो लाख किसानों ने आत्महत्या कर ली। खेती में काम आने वाली जितनी भी चीजें हैं (inputs) हैं उनके दाम बढ़ गए हैं। सरकार ने सबसिडी देनी बन्द कर दी है। जब फसल पककर अनाज आता है तो उसके उगाने में जितना खर्चा हुआ, बेचकर उतना भी नहीं मिलता है। अभाव इतना जबरदस्त हो रहा है कि कर्ज लेना पड़ता है। और उसकी वजह से उसकी जो हालत होती है, इज्जत का सवाल भी आ जाता है। जब चारों तरफ बेइज्जती होती हैं। किसान भिखारी नही है। किसान की इज्जत का सवाल है। जब बेइज्जती होती है तो क्या करे–वह आत्महत्या कर लेता है। हालांकि यह सही रास्ता नहीं है। जनआन्दोलन का रास्ता चुनना चाहिए न कि आत्महत्या का रास्ता। लेकिन वह मजबूर हो जाता है। ये है स्थिति। इस सब के खिलाफ कोई आन्दोलन नही होगा, इस सब के खिलाफ कोई मांग नहीं रहेगी तो हड़ताल का क्या मतलब है? सरकार को अगर इन सभी मुद्दों पर अमल करने के लिए मजबूर न किया जाए तो आन्दोलन का लक्ष्य क्या है? एक तरफ उनमें और हममें यह फर्क है। दूसरी तरफ यह जो मांग है महंगाई रोको, भाव घटाओ–यह भाव कैसे घटेगा, महंगाई कैसे रुकेगी? बड़े बड़े व्यापारी मण्डी में तमाम अनाज खरीद लेते हैं और गोदामों मे भर लेते हैं, बाद में कह देते हैं कि कुछ नहीं है, सब खत्म हो गया और एक कृत्रिम अभाव पैदा कर देते हैं। तब जरूरतमन्द आदमी चाहे अनाज का जितना भी भाव हो, पैसा देकर खरीदेगा ही। मेन्युपुलेशन ऑफ प्राइस होगा। भाव बढ़ता जाएगा। इस प्रक्रिया को आप कैसे बन्द करोगे। अगर यह बन्द नहीं हुई तो आप महंगाई को काबू करने का चाहे कितना भी दावा करो पर क्या आप कर सकेंगे? इसलिए एकमात्र हमारी पार्टी ने ही, कॉमरेड शिवदास घोष ने मांग उठाई थी कि ऑल आउट स्टेट ट्रेडिंग हो। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है कि जो जरूरत की चीजें हैं उनका बिजनेस कोई व्यक्ति नहीं कर सकता, कोई भी प्राइवेट बिजनेस उसमें नहीं कर पाएगा। फसल तैयार होते ही सरकार किसानों से अनाज खरीद ले और उसको ढोकर कहीं लाना–ले जाना कहिए, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के माध्यम से उसका वितरण कहिए उसका सारा खर्चा लगाकर तय कर ले कि भाव क्या हो और वह भाव भले ही उचित न हो, कम भाव मिले लेकिन महंगाई क्यों बढ़ेगी। यहां पैसे दो तो सामान मिलेगा पैसे नहीं हैं तो सामान भी नहीं है। वे कहते हैं कि सामान नहीं है, सामान नहीं है तो ज्यादा पैसे देने से कैसे मिल रहा है? कालाबाजारी की यह जो बदमाशी चल रही है इसे रोकने के लिए सरकार सिर्फ खुदरा व्यापार ही नहीं बल्कि थोक व्यापार को भी अपने हाथ में ले, नेशनलाइज करे। क्यों? इसलिए कि अगर थोक व्यापार का नेशनलाइजेशन नहीं किया तो ये लोग क्या करते हैं? ये बड़े बड़े व्यापारी मण्डी में ऐसे ही खरीदेंगे लेकिन अलग अलग जगहों पर उसे रखेंगें, किसी एक जगह नहीं रखेंगे, किसी गोदाम में नहीं रखा, छापा मारने पर भी आपको मिलेगा नहीं। हरियाणा मे 1974 में इंदिरा गांधी ने थोक व्यापार का राष्ट्रीयकरण कर दिया था। यहां तब गेहूं का भाव 100 रुपये प्रति क्विंटल था जो सरकार की ओर से खरीद के लिए दिया जाता था। जबकि इन व्यापारियों ने उस समय 112 रुपये प्रति क्विंटल यानी 12 रुपये ज्यादा दे दिया। ऐसे में किसान अपना अनाज किसको बेचेगा, उसने व्यापारियों को बेच दिया और व्यापारी ने वह लेकर अपने गोदामों में नहीं रखा बल्कि किसानों के घर घर में बोरियों में भर कर रख लिया और कह दिया कि जरूरत होगी तब हम उठा लेंगे। पुलिस–प्रशासन और सरकार ने जितना भी खोजा, छापे मारे कहीं कुछ नहीं मिला। यह जो शैतानी है, यह होगी ही। इसलिए हमारी पार्टी ने दिखाया कि खुदरा व्यापार और थोक व्यापार दोनों का ही राष्ट्रीयकरण करना होगा। इसमें कोई व्यक्तिगत बिजनेस नही चलेगा। अगर कोई करे तो उसे सख्त सजा देनी होगी। ऐसा अगर हो तो महंगाई पर काबू पाया जा सकता है। जब तक ऐसा नहीं होगा, महंगाई भी नहीं रुकेगी। यह मांग सीपीआई, सीपीआई(एम) ने नहीं उठाई है। पश्चिम बंगाल में हमने बार बार यह मांग उठाई

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉ. चक्रवर्ती का भाषण... (पृष्ठ 5 का शेष)

है। वहां उनकी सरकार है लेकिन हमारी इस मांग को वह मानती नहीं है । अत: उनके साथ हमारा बहुत फर्क है। हम दोनों एक नहीं हैं। हमारे और उनमें राजनीतिक फर्क क्या है? राजनीतिक फर्क यह है कि हम आन्दोलन चाहते हैं ताकि ये सब मांगें पूरी हो जाएं। इसके लिए अगर जरूरत पड़े तो लगातार लड़ाई चलती रहेगी, यह जितने दिन चलती है चले। इसके लिए क्या करना है-जनता को संगठित करना है, जन कमेटियां गठित करनी हैं। असंगठित जनता का सुसंगठित फौज-पुलिस के साथ टकराव हो तो दो दिन में खत्म हो जाएगा। इसलिए कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि आन्दोलन में जो लोग आने को तैयार हैं उनकी अपनी कमेटियां बनाना-जनता के आन्दोलन के औजार के रूप मे जन कमेटियां बनाना। यही जन कमेटियां धीरे-धीरे आन्दोलन चलते-चलते जब उन्नत स्तर पर चली जाएंगी, उन्नत संस्कृति को आधार करके, राजनीतिक चेतना को लेकर एक दिन जैसा कि रूस में हुआ था ये सोवियतों की तरह, जनता के क्रांतिकारी संगठनों की तरह बन जाएंगी। वे क्रांति करेंगी। हमने आम हड़ताल का एक आह्वान कर दिया, घोषणा कर दी, एलान कर दिया और घर जाकर सो गए, जनता जहां भी जो चाहे करे तब इससे क्या होगा? बार बार ऐसा हुआ। कितनी बार आन्दोलन हुए, हड़तालें हुई लेकिन जनता की समितियां नहीं बन पाई, जनता की राजनीतिक शक्ति का भी जन्म नहीं हुआ। जो क्रांति चाहते हैं केवल वही चाहते हैं जनता की राजनीतिक शक्ति पैदा हो। यह शक्ति वही होगी जब ये स्थानीय कमेटियां, जन कमेटियां लड़ाई लड़ती रहेंगी, पुलिस के साथ लड़ते लड़ते वे हथियारबंद संघर्ष भी सीखेंगी, नक्सलों की तरह वे लोग जंगलों-बीहड़ों मे छुप-छुप कर पिस्तौल लेकर फट-फट करने नही जाएंगे। जब ये आम लोग ही फौज में तब्दील हो जाएंगे तब क्रांति होगी। यह कॉमरेड घोष ने बार-बार दिखाया। उन लोगों के साथ हमारा यह जो फर्क है उसे कामरेडों को बड़ा गहराई से समझना चाहिए। इसके अलावा यह बात है कि वे सब एक हवाई आन्दोलन कर रहे हैं। क्या आन्दोलन की कोई तैयारी है? क्या तैयारी है? हरियाणा में क्या तैयारी देखी? तमाम भारत बन्द कर देने के लिए कितनी बड़ी ताकत होनी चाहिए, कितना प्रचार होना चाहिए, कितने आदमियों को जुटाना चाहिए, आदमियों को संगठित करके इसे सफल करना है। लेकिन कोई प्रयास किया। नही सिर्फ घोषणा कर दी और सो गए। 13 पार्टियां और वे भी कोई आर्डिनरी पार्टियां नहीं बड़ी-बड़ी पार्टियां हैं-मुलायम सिंह यादव भी हैं, लालू प्रसाद यादव भी हैं, चन्द्रबाबू नायडु भी हैं, जयललिता हैं, जितनी भी क्षेत्रीय पार्टियां हैं जिनका जनवादी आन्दोलन का कोई इतिहास नहीं है बल्कि जनवादी आन्दोलन को दबाने का ही इतिहास है। जयललिता ने राज्य सरकार के कर्मचारियों में से 75 हजार को नौकरी से निकाल दिया था। इस सब के बावजूद वे आन्दोलन के साथी हो गए हैं। क्या यह आन्दोलन है? यह सब आन्दोलन नहीं है। पश्चिम बंगाल में चुनाव आ रहा है। इस चुनाव में वे जीतेंगे नहीं। चुनाव वे हारेंगे-यह एकदम साफ हो गया है। वे अगर हारे तो फिर गए। यह पार्टी बर्बाद हो जाएगी, खत्म हो जाएगी, यह बात वे जानते हैं। उनकी मौत की घन्टी बज जाएगी। इसी डर से वे आन्दोलन-आन्दोलन का खेल, एक नाटक कर रहे हैं। सही मायने में अगर वे आन्दोलन चाहते तो हमें बुलाते न कि उनको जो आन्दोलन की कोई ताकत नहीं हैं। जयललिता आन्दोलन की कोई ताकत नहीं है। चन्द्रबाबू नायडु आन्दोलन की कोई शक्ति नहीं हैं। लेकिन हमें बुलाने के लिए उन्हें अपनी नीति त्याग देनी पड़ती। उनकी मूल नीति तो यह है कि इन सबको किसी तरह जुटा कर एक माहौल तैयार करके वोट बटोर कर सरकार बनाना। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की नीति ठीक इसके उलट है। वोट की हमें परवाह नहीं। चुनाव हम लड़ते हैं। अगर वोट मिल जाएं तो अच्छा है लेकिन अगर न भी मिले तो उसका असर हम पर कुछ नहीं पड़ता। जीतने से पड़ता है, जीतने से जैसे हमारा एक एमपी बना तो बहुत मुद्दे अब हम संसद मे उठाते हैं। इससे सरकार पर एक दबाव पड़ता है। पार्टी का यह आधार है आन्दोलन। आन्दोलन चलते-चलते हम यहां तक आए हैं, इतनी दूर तक आए हैं, आन्दोलन का यह माहौल तैयार करना हमारा काम है, हमारा फर्ज है। यह फर्ज निभाना है। आज जब आन्दोलन के समय पार्टी स्थापना दिवस आ गया है तो पार्टी स्थापना दिवस को हम इस तरह मनाएंगे कि आन्दोलन मजबूत हो। इस हड़ताल के प्रचार के साथ जनता को दिखाना है कि आन्दोलन के बिना कोई मांग पूरी नही होगी। ये सारी मांगें आपके जीवन की मांगें हैं। ये मांगें आई कहां से? क्यों आई? चाहे कांग्रेस सरकार हो या बीजेपी सरकार, सत्ता में जो भी पार्टी है वह पूंजीपतियों की सेवा कर रही है, पूंजीपतियों की दलाल है, पूंजीपतियों के स्वार्थ में जिन सब नीतियों को उन्होंने अपनाया, जो सब पॉलिशी उन्होंने ली उन्हीं की देन है यह संकट। भूमण्डलीकरण से जो भयंकर स्थिति तैयार हुई वह भूमण्डलीकरण पूंजीपतियों की सेवा करने के लिए लाया गया। जो सब नीतियां सरकारों ने चालू की, लागू की, उससे जो संकट आया, बेरोजगारी, भुखमरी, महंगाई पैदा हुई, शिक्षा-चिकित्सा का संकट आया। ये सारे संकट, ये सारी समस्याएं इनकी इस नीति के चलते पैदा हुई हैं। हमारे कह देने से ये इस नीति को छोड़ देंगे ऐसी बात नहीं है। किसी की गलती से ऐसा हो गया यह बात भी नहीं है। यह एक सुचिन्तित, सुपरिकल्पित व सुनियोजित नीति है जो पूंजीवाद की रक्षा करने के उद्देश्य से लागू की गई है। इसे अगर हराना है, परास्त करना है, आपको अगर अपनी मांग पूरी करवानी है तो इतना बड़ा आन्दोलन होना चाहिए जिससे सरकार पर इतना दबाव पड़े कि वह मांगें पूरी करने पर मजबूर हो जाए। इस तरह की तैयारी करने का सीपीआई, सीपीआई(एम) इन 13 पार्टियों ने क्या कोई प्रयास किया? हां यह बात सही है कि हमारी पार्टी की ताकत बढ़ रही है जैसे कि मैंने बताया, आज देश के 21-22 राज्यों में हमारी पार्टी काम कर रही है फिर भी यह बात सच है कि इतनी बड़ी हमारी पार्टी नहीं हुई कि अकेले ही पूरे देश में हड़ताल कर दे। यह अभी संभव नही हैं, यह हमें संभव बनाना है इसको वास्तविकता में साकार करना है। लेकिन यह एक दिन में तो नहीं होगा। हां हमारी पार्टी की जितनी ताकत है उसके दम पर हम भरसक कोशिश कर रहे हैं लेकिन ये 13 पार्टियां कुछ भी आन्दोलन करने को तैयार नहीं हैं। बस यहां-वहां कुछ छोटे-मोटे पोस्टर लगाए हैं, दीवारों पर चिपकाए हैं आते वक्त रास्ते में एक कॉमरेड दिखा रहा था। वे पोस्टर शायद ही किसी को नजर आएंगे।

इस स्थिति में हम पार्टी का स्थापना दिवस आज मना रहे हैं। अत: आपके लिए यह बात साफ हो गई होगी कि आन्दोलन को बढ़ाना ही हमारा काम है, यह आन्दोलन धीरे-धीरे उन्नत से उन्नततर स्तर पर जाते हुए जब राजनीतिक आन्दोलन और भी उन्नत रूचि-संस्कृति के आधार पर, उच्च नीति-नैतिकता के आधार पर गठित होगा, जब लोग इस व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए तैयार हो जाएंगे तब क्रांति होगी किन्तु होगी आन्दोलन के इस रास्ते से ही, बातों से नहीं। पार्टी स्थापना दिवस के इस अवसर पर कॉमरेडों से मैं यही कहुंगा कि हमारे अन्दर दो तरह का संघर्ष हैं। एक है, खुद को तैयार करना। यह पार्टी का अन्दरूनी द्वन्द्व है। जिस द्वन्द्व से चिन्तन का टकराव है, उसी टकराव से मार्क्सवादी दृष्टिकोण और विचारधारा को आधार करके एक सत्य पर पहुंचना है, एक सिद्वान्त पर पहुंचना है। पार्टी के अन्दर यह एक वैचारिक संघर्ष है ताकि एक तरफ हमारी चेतना का स्तर, विचार-विश्लेषण की क्षमता बढ़ती जाए और दूसरी तरफ व्यक्तिवादी चिन्तन से लड़ते हुए सामूहिक जीवन, सामूहिक चिन्तन व सामूहिक आचरण हमें अपनाना है और अमल में लाना है ताकि संस्कृति मार्क्सवादी सर्वहारा क्रांतिकारी संस्कृति बने। इसके आधार पर ही हो हमारा उन्नत चिन्तन। यह है हमारी पार्टी का अन्दरूनी द्वन्द्व। दूसरी लड़ाई है, जनता में जाना, जनता को संगठित करना। जनता की जो तात्कालिक ज्वलंत समस्याएं हैं उनको लेकर जनता को संगठित करना, उनकी कमेटियां बनाना और उन कमेटियों को लेकर आन्दोलन छेड़ना तथा आन्दोलन को नेतृत्व देना। इस प्रक्रिया से एक दिन जब जन संगठन तैयार होगा जन संघर्ष के औजार के रूप में जन कमेटियां बन जाएंगी, जनता की चेतना का स्तर बढ़ जाएगा और उनकी एकता कायम हो जाएगी तब धीरे-धीरे हम क्रांति की तरफ बढ़ते जाएंगे। क्रांति की मंजिल तक पहुंचना ही हमारा काम है। सिर्फ क्रांति तक ही नहीं बल्कि क्रांति सम्पन्न करने के बाद समाजवाद कायम करना और साम्यवाद में जाना हमारा काम है। इस संघर्ष का कोई अन्त नहीं है। संघर्ष ही जीवन है। जिस जीवन मे संघर्ष नही है वह जीवन जीवन नही है। वास्तव में ऐसा कोई जीवन होता भी नहीं है। आम जनता सोचती है कि हम तो संघर्ष नहीं चाहते हैं क्योंकि संघर्ष कोई अच्छी चीज नहीं है। लेकिन जो ऐसा सोचता है उसके बारे में क्या कहें, वह तो अन्धा है, अनजान है। वह नहीं जानता कि उनके ही जीवन में तो सबसे ज्यादा संघर्ष है-नौकरी पाने के लिए उन्हें बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है। खाना जुगाड़ करने के लिए यहां-वहां मारे-मारे फिरते हैं। उनकी जमीन उनके हाथ से निकलती जा रही है। इससे उन्हें चिन्ता सता रही है कि आगे क्या होगा। माता पिता का इलाज कराना है-कैसे कराएं, क्या करें। वे इस तरह के हजारों संकटों में हैं। यह क्या संघर्ष नहीं है? संघर्ष के बिना कोई जीवन नहीं होता है। द्वन्द्व के बिना कोई जीवन, कोई वस्तु इस वस्तु जगत में नहीं रह सकती। लेकिन क्रांतिकारी के लिए यह द्वन्द्व खुशी का द्वन्द्व है। द्वन्द्व का कारण जो है उसे आम लोग नहीं जानते हैं, नहीं समझते हैं लेकिन हम जानते हैं कि किस कारण से यह द्वन्द्व है। किस प्रकार से यह द्वन्द्व हल करना है यह भी हम जानते हैं। इसलिए यहां द्वन्द्व सहज है। क्रांतिकारी जीवन में द्वन्द्व सहज है। द्वन्द्व के बिना कहीं कुछ भी नहीं है। अगर आप द्वन्द्व का कारण नही जानोगे तो इसे हल करने का रास्ता भी नहीं मिलेगा और जीवन भर भुगतते रहोगे, जीवन भर नसीब को कोसते रहोगे लेकिन क्रांतिकारी जीवन में जब निर्वैयक्तिक संघर्ष का रास्ता हमें मालूम होता है। मार्क्स ने कहा है कि कम्युनिस्ट बिल्कुल सुनिश्चित होता है (Communist is sure)। क्यों ? इसलिए कि वह दूर तक देख सकता है। दूर तक देखने की ताकत उसमें होती है। इसलिए वह जानता है कि भविष्य में क्या आने वाला है, क्या आ रहा है, उसके बाद क्या आएगा और फिर उसके बाद क्या आएगा। वह कभी अनिश्चित नहीं होता। यह है हमारा संघर्ष।

स्थापना दिवस पर मैं कॉमरेडों से यह कहुंगा कि इस संघर्ष को तेज करो, इस संघर्ष को सुसंगठित रूप में करो, पार्टी की राज्य कमेटी के नेतृत्व में करो व सही ढंग से करो। ऐसा करोगे तो पार्टी जरूर बढ़ेगी। हरियाणा में अब पार्टी बढ़ रही है-बीच में थोड़ा-बहुत जो खलल पड़ गया था सो दूर हो गया। पार्टी अब उससे उबर चुकी है। खयाल करके देखने से आप पाएंगे कि तमाम देश में और हरियाणा में भी पार्टी बढ़ रही है और बढ़ेगी ही। अगर आप सारे कॉमरेड इस बात को समझ जाओ और तन-मन-धन से लग जाओ तो पार्टी जरूर बढ़ेगी। इतना कहकर मैं हमारी पार्टी के संस्थापक महासचिव व इस युग के महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष को लाल सलाम देते हुए अपनी बात यहीं समाप्त करता हूं। ■

27 अप्रैल को आम हड़ताल सफल करने के लिए एसयूसीआई (सी) कार्यकर्ता देशभर में सड़कों पर उतरे

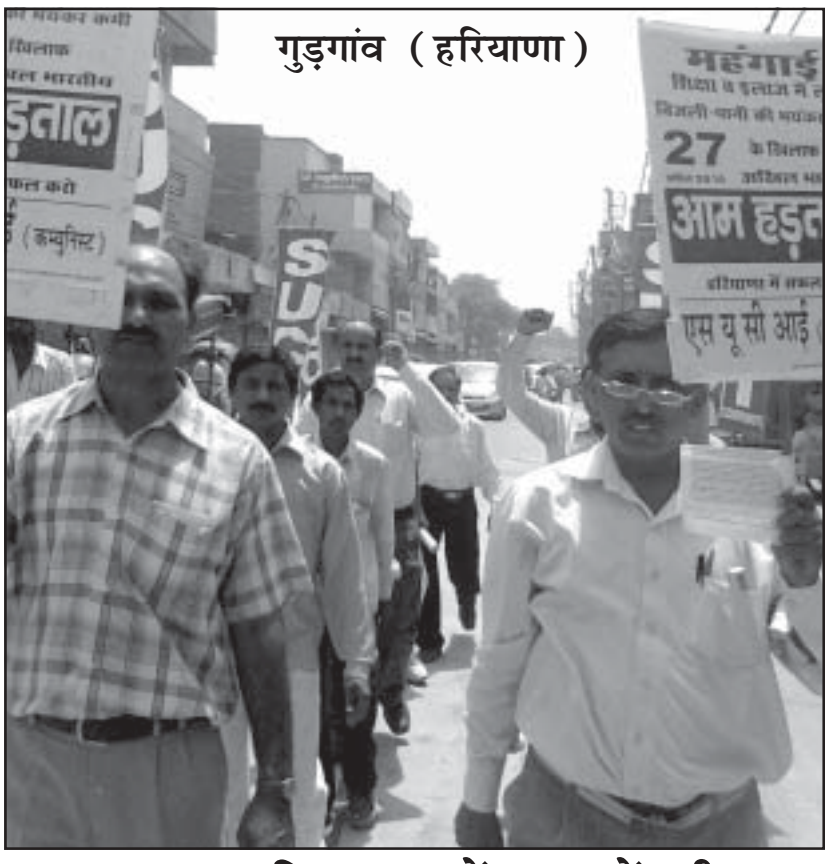

बहादुरगढ़ (हरियाणा) में मजदूरों की सभा

18-4-10 को एमआईई में एक श्रमिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों श्रमिकों ने भाग लिया। वक्ताओं में कॉमरेड हरिप्रकाश, जयकरण, एडवोकेट उमेदसिंह दहिया, कपिलप्रसाद, सीताराम, लालजी व सचिव सतीशकुमार रहे। अध्यक्षता कॉ. रामबड़ाई ने की।

वक्ताओं ने कहा कि इस भयंकर महंगाई के जमाने में दो तीन हजार रुपये मजदूरी के मिलते हैं जिनसे दाल रोटी भी नहीं चलती। प्रस्ताव पास करके न्यूनतम वेतन लागू करने, ठेकेदारी प्रथा पर रोक लगाने, ओवर टाइम की डबल मजदूरी देने, 8 घन्टे काम लेने, हाजिरी रजिस्टर में नाम लिखने, पक्का करने, बीपीएल कार्ड पर सस्ता राशन देने, सब को ईएसआई सुविधा देने, सुरक्षा प्रबंध करने, मौत हो जाने पर दस लाख रुपये मुआवजा देने, बेघर मजदूरों को 50-50 गज के प्लाट देने, महंगाई पर रोक लगाने तथा मजदूर आंदोलन में पुलिस दखल बन्द करने, महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेतन देने की सरकार तथा प्रशासन से जारेदार ढंग से मांग की गई।

पूंजीवादी शोषण, जुल्म, अत्याचार के खिलाफ संगठित जन आंदोलन तेज करने के आह्वान के साथ सम्पन्न हुई।

दंतेवाड़ा हत्याकाण्ड पर लोक सभा में सांसद तरुण मण्डल का वक्तव्य

दंतेवाड़ा में कई सीआरपीएफ जवानों और तथाकथित माओवादी ग्रुप के कुछ लोगों के मारे जाने की दुखद घटना के संबंध में 15 अप्रैल 2010 को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के सांसद डॉक्टर तरुण मण्डल ने कहा, छत्तीसगढ़ राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार ने माओवादी समस्या से निपटने लिए जिस प्रकार बन्दूक का रास्ता अपनाया है, वह सही नहीं है, इस समस्या का समाधान करने के लिए राजनैतिक विचार-विमर्श जरूरी है। महान क्रांतिकारी भगतसिंह ने कहा था ''बम और पिस्तोल इंकलाब नहीं लाते बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।

ज्यादातर सांसदों ने जनजाति और आदिवासी लोगों की वंचना का जिक्र किया है। आजादी के बाद से ही केन्द्र और राज्य की कोई भी सरकार इसकी जिम्मेदारी से इनकार नहीं कर सकती है। आदिवासी अब बहुत ही आशंकित हैं कि कार्पोरेट सैक्टर, मल्टीनेशनल और बड़े उद्योगपति उनकी जमीन को गैरकानूनी तरीके से हड़पने के प्रयास कर रहे हैं, वन संपदा और खनिज सम्पदा को हथियाना चाहते हैं। समाचार पत्रों के माध्यम से हमें पता चल रहा है कि बड़े-बड़े पूँजीपतियों की इस लालची कुचेष्टा में विभिन्न सरकारें सांठगांठ कर रही हैं।

आदिवासी और अन्य वंचित लोगों की दयनीय स्थिति का लाभ उठाकर माओवादी इस क्षेत्र में कुछ आंदोलन चलाने का प्रयास कर रहे हैं। ये तथाकथित माओवादी असल में बीसवीं सदी के महान नेता माओ त्से-तुंग जिनके नेतृत्व में उस देश के मुक्ति संग्राम में भारतीय जनता ने डॉ. कोटनिस, डॉ. अटवाल के नेतृत्व में एक मेडिकल टीम भेजी थी-उस महान नेता के सच्चे अनुयायी नहीं हैं। माओ त्से-तुंग की विचारधारा और आदर्श में कहीं भी जन आंदोलन को छोड़कर व्यक्ति हत्या का उल्लेख नहीं है। ये माओ-त्से-तुंग की विचारधारा का भी अनुसरण नहीं करते हैं।

इन माओवादियों के दमन के नाम पर सरकार जो ज्वाइंट ऑपरेशन चला रही है वह राज्य संचालित आतंकवाद का दूसरा नाम है। पश्चिम बंगाल के लालगढ़ में हमने यही देखा है। वहां अशांति को दबाने के नाम पर सरकार पीने के पानी, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, विकास आदि की माँग पर आंदोलन करने वाली जनता को जेलों में ठूस रही है और किसी किसी की हत्या भी कर रही है। संयुक्त वाहिनी और शासक सीपीएम की गुण्डावाहिनी ने पुलिसी संत्रास-विरोधी जन कमेटी के अध्यक्ष लाल मोहन टूडू की हत्या की है। पश्चिम बंगाल और दूसरी जगह का कोई भी शुभ बुद्धि सम्पन्न आदमी इस संयुक्त अभियान का समर्थन नहीं करता है। इस अर्ध-सैनिक वाहिनी और पुलिस को सामने रखकर सीपीएम अपने खोये हुए आधार क्षेत्र को पुनः हासिल करने का प्रयास कर रही है।

हाल ही में माननीय गृहमंत्री की ओर से मुझे एक जवाब मिला है जो उन्होंने मेरे द्वारा भेजे गए एक पत्र के उत्तर में दिया है। उन्होंने मुझे जो जवाब भेजा है वह पूरी तरह अस्वीकार्य है। यह बहुत ही रूटीन तरह का, बहुत ही मामूली तरह का जवाब है जो किसी भी अन्य राज्य का कोई भी गृहमंत्री सीआरपीएफ बटालियनों और समाज-विरोधी तत्वों के वक्तव्यों को आधार बना कर देता है जबकि कमेटी के अध्यक्ष की हत्या के लिए यही जिम्मेदार हैं।

अतः सरकार के कदम इस तरह के होने चाहिएं कि शोषित वंचित लोग महसूस करें कि सरकार का रवैया उनके प्रति दोस्ताना है और विकास के तमाम कार्य पूरी निष्ठा के साथ लागू करने चाहिएं। मैं कहना चाहता हूँ कि राजनैतिक बातचीत से ही इस समस्या का समाधान हो सकता है। उसका समाधान सैनिक या अर्धसैनिक बलों को भेजने से नहीं होगा चाहे कितने ही अस्त्र-शस्त्रों से लैस करके उन्हें भेजा जाए।

जगह-जगह मई दिवस मनाया गया

मुख्य संपादक : कृष्ण चक्रवर्ती

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाषः 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com